RNI-MPBIL/2011/39805

निष्पक्ष और निर्भीक साप्ताहिक

जगत प्रवाह

वर्ष : 15 अंक : 14 प्रति सोमवार, 5 अगस्त 2024 मूल्य : दो रुपये पृष्ठ : 8

वरिष्ठ नेताओं की अनदेखी के कारण कांग्रेस के हाथ से निकलता मध्यप्रदेश

कवर स्टोरी

-विजया पाठक

एडिटर

कमलनाथ के मैनेजमेंट और दिग्विजय के संपर्क के बिना प्रदेश में कांग्रेस नहीं लहलहा सकती पताका

एनडीए सरकार के गठन के बाद केंद्र में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व वाली सरकार ने कामकाज शुरू कर दिया है। एक तरफ जहां भारतीय जनता पार्टी आगामी दिनों में कई राज्यों में होने वाले विधानसभा चुनाव की तैयारी में जुट गई है वहीं कांग्रेस पार्टी अभी तक लोकसभा और विधानसभा चुनाव में मिली हार पर मंथन कर रही है। कांग्रेस पार्टी और नेताओं को यह बात अच्छी तरह समझना चाहिए कि आखिर वह क्या वजह है जिसने पार्टी को मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़ और राजस्थान में हार दिलवाई। मेरे लिए यह विषय नया नहीं इससे पहले की पोस्ट में भी मैंने कई बार इस बात का जिक्र किया है कि मध्यप्रदेश में प्रदेश अध्यक्ष की कमजोर लीडरशिप, छत्तीसगढ़ में भूपेश बघेल का भ्रष्टाचार का आतंक और राजस्थान में अशोक गहलोत और सचिन पायलट के बीच हो रही आपसी रस्साकसी ने कांग्रेस को तीनों ही राज्यों से बाहर का रास्ता दिखा दिया। अब सवाल आता है मध्यप्रदेश का। मध्यप्रदेश एक ऐसा राज्य है जहां कांग्रेस पार्टी ने एक लंबे समय तक राज किया। न सिर्फ राज किया बल्कि प्रदेश हित में कई प्रमुख फैसले भी किए। लेकिन आज स्थिति बिल्कुल उलट है। प्रदेश में कांग्रेस प्रदेश के सबसे बड़े मुददे बेरोजगारी को लेकर कठघरे में खड़ा नहीं कर पा रही है। जबकि पूर्व सीएम कमलनाथ बेरोजगारी को लेकर कई बार चिंता जता चुके हैं और सरकार से सवाल कर चुके हैं। लेकिन इतने भर से इस महत्वपूर्ण मुददों से पीछा नहीं छुड़ाया जा सकता है। कांग्रेस को इस मुददे को बड़े स्तर पर ले जाना होगा। (शेष पेज 3 पर)

हारे हुए किले को जीतने के लिए युवा जोश के साथ अनुभवी सेना नायक बहुत जरूरी होता है।

छत्तीसगढ़ में धूमधाम से मनाया जाता है हरेली त्यौहार

-विजया पाठक

जगत प्रवाह. रायपुर। भारत कृषि प्रधान देश के नाम से जाना जाता है। ठीक इसी तरह छत्तीसगढ़ भी कृषि प्रदेश के नाम से जाना जाता है। छत्तीसगढ़ में श्रावण महीने की कृष्ण पक्ष की अमावस्या तिथि को हरियाली अमावस्या यानी हरेली त्यौहार बड़े धूमधाम से मनाया जाता है। इस दिन खेती-किसानी से संबंधित चीजों की पूजा की जाती है। साथ ही इस दिन विशेष छत्तीसगढ़ी पकवान बनाए जाते हैं। हरेली तिहार के दिन किसान अपने कृषि से संबंधित उपकरणों की पूजा-पाठ करने के साथ ही अपने पशुधन की भी पूजा करते हैं। हरेली के दिन प्रदेश के ग्रामीण इलाकों में छत्तीसगढ़ी व्यंजन बनाकर इस पर्व को मनाते हैं।

इसके साथ ही इस दिन ग्रामीण इलाकों में बांस से बनी गेड़ी चढ़ने की भी प्रथा और परंपरा है। इस तरह के कई कारण हैं, जिसकी वजह से छत्तीसगढ़ में हरेली तिहार माना जाता है। हरेली के दिन उत्सव मनाते हैं। छत्तीसगढ़ में भी ग्रामीण क्षेत्रों में भी हरेली तिहार बड़े ही धूमधाम मनाई जा रही है। हरेली तिहार मनाने के लिए ग्रामीण, किसान उत्साह देखा गया। हरियाली अमावस्या का यह त्यौहार छत्तीसगढ़ नहीं बल्कि पूरे संसार में बड़े धूमधाम से मनाया जाता है। आपको बता दें कि छत्तीसगढ़ पूरी तरह से 100 फीसद कृषि प्रधान क्षेत्र है। छत्तीसगढ़ के किसानों के लिए सावन का महीना रिमझिम त्योहारों के बीच प्रकृति में हरियाली ही नजर आती है। किसानों का प्रदेश होने के कारण लोग इस हरीतिमा को उत्सव के रूप में मनाते हैं। इस समय अवधि में प्रदेश के किसान अपने पशुधन और कृषि से संबंधित औजार और उपकरणों की पूजा पाठ करते हैं। बारिश के दिनों में छत्तीसगढ़ में कीचड़ को लद्दी बोला जाता है। ग्रामीण इलाके के लोग हरेली तिहार को उत्सव के रूप में मनाते थे। इस दौरान लोग गेड़ी चढ़ते थे। आगे चलकर यही गेड़ी चढ़ने और भौरा खेलने की परंपरा बन गई। इस दिन खास तौर पर ठेठरी, खुरमी, पीडिया, गुलगुला, भजिया जैसे पकवान बनाए जाते हैं। इस तिहार को खास तौर पर ग्रामीण क्षेत्रों में मनाया जाता है। हरेली के दिन टोटका के तौर पर लोग खेत और घरों में नीम की पत्तियां लगाते है।

छत्तीसगढ़ में कांवड़ियों पर हेलीकॉप्टर से पुष्प-वर्षा

-दुर्गेश अरमोती

जगत प्रवाह. कवर्धा। छत्तीसगढ़ के कवर्धा में पहली बार हेलीकॉप्टर से कांवड़ियों पर हेलीकॉप्टर से पुष्प वर्षा की गई। मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय और डिप्टी सीएम विजय शर्मा ने बाबा भोरमदेव मंदिर में जलाभिषेक करने पहुंचे कांवड़ियों पर पुष्प वर्षा कर स्वागत किया। कांग्रेस ने X पर लिखा है कि भाजपा अहम मुद्दों से जनता का ध्यान भटका रही है। मुख्यमंत्री साय और डिप्टी मुख्यमंत्री शर्मा ने भोरमदेव मंदिर में पूजा-अर्चना की और भगवान शिव से आशीर्वाद लिया। इस अवसर पर भक्तों का भारी हुजूम मंदिर और उसके आसपास के इलाकों में देखा गया। भगवा वस्त्रों में सजे कांवड़ियों के जत्थे ने पूरे क्षेत्र को भक्ति और श्रद्धा से भर दिया।

मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने कहा कि भगवान शिव के प्रति लोगों की अटूट आस्था और भक्ति देखकर मन प्रसन्न है। हमने इस आयोजन के माध्यम से श्रद्धालुओं को सम्मानित करने और उनकी यात्रा को सुखद बनाने का प्रयास किया है। वहीं डिप्टी सीएम शर्मा ने कहा कि कांवड़ियों पर पुष्प वर्षा एक ऐतिहासिक क्षण है, हमें खुशी है कि हम इस आयोजन का हिस्सा बने। यह कार्यक्रम राज्य सरकार के विशेष आयोजन का हिस्सा था, जिसमें भक्तों के लिए विशेष व्यवस्थाएं की गई थीं। कांवड़ यात्रा के दौरान सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम किए गए थे। श्रद्धालुओं को किसी भी प्रकार की असुविधा न हो, इसका विशेष ध्यान रखा गया।

एमआईसी में कई फैसले:

शहर में चारों तरफ गौठान बनाने का प्रस्ताव

-संवाददाता

जगत प्रवाह. रायपुर। शहर में आवारा मवेशियों और कुत्तों की समस्या को लेकर सोमवार को महापौर परिषद की बैठक में चर्चा हुई। निगम जल्द ही शहर के चारों ओर गौठान (कांजी हाउस) तैयार करने के लिए शासन को प्रस्ताव भेजेगा। सोनडोंगरी में तैयार हो रहे डॉग शेल्टर को जल्द शुरू कराने की चर्चा हुई। यहां पर बीमार कुत्तों का इलाज करने के साथ उनकी नसबंदी भी की जाएगी। इससे उनकी वंशवृद्धि रुकेगी। शहर आवारा और खूंखार कुत्तों के आतंक से मुक्त हो सकेगा।

एमआईसी की बैठक महापौर एजाज ढेबर की अध्यक्षता में दोपहर 12 बजे शुरू हुई। बैठक में दानवीर भामाशाह वार्ड के मंगलबाजार, खालबाड़ा, कुकरी तालाब, कलिंग नगर आदि इलाकों में जलभराव की समस्या दूर करने 1.64 करोड़ से कवर्ड नाली व पुलिये का प्रस्ताव स्वीकृत किया गया।

शहर में हवा की गुणवत्ता सुधारने के लिए 15वें वित्त आयोग के तहत 4.50 करोड़ के काम की स्वीकृति दी गई। बैठक में राष्ट्रीय पेंशन सहित कई प्रस्तावों पर चर्चा हुई। सफाई ठेकेदारों के टेंडर नहीं किए जाने को लेकर स्वास्थ्य विभाग के अध्यक्ष नागभूषण राव यादव ने आपत्ति की। उन्होंने कहा कि एल-1 को टेंडर जारी किया जाना चाहिए। बार-बार टेंडर निरस्त क्यों किया जा रहा है।

श्रीकुमार मेनन ने शहर में जलभराव की समस्या को लेकर आपत्ति की। सुरेश चन्नावार ने शहर के अविकसित उद्यानों को लेकर कार्ययोजना तैयार करने की जरूरत बताई। सतनाम पनाग ने कहा कि कई जगहों पर पानी की सप्लाई एक घंटे के बजाए आधे घंटे की शिकायत आ रही है। बारिश में भी इस तरह की शिकायत क्यों है?

महापौर एजाज ढेबर ने निगम कमिश्नर और संबंधित विभाग के अफसरों को इन तमाम शिकायतों को जल्द दूर करने के निर्देश दिए। इस मौके पर निगम कमिश्नर अबिनाश मिश्रा, एमआईसी सदस्य ज्ञानेश शर्मा, सुंदर जोगी, जितेंद्र अग्रवाल, समीर अख्तर, सुरेश चन्नावार, आकाश तिवारी, सहदेव व्यवहार, द्रोपती पटेल निगम सचिव विनोद पांडे आदि मौजूद थे।

रानी दहरा जलप्रपात में डूबा डिप्टी सीएम अरुण साव का भांजा

-संवाददाता

जगत प्रवाह. रायपुर। छत्तीसगढ़ के बेमेतरा जिले के नवापारा के रहने वाले युवक की जलप्रपात में नहाने के दौरान मौत हो गई। 21 साल का युवक डिप्टी सीएम साव का भांजा बताया गया। फिलहाल उसका शव नहीं मिला है। बोडला पुलिस मौके पर मौजूद है। युवक का शव को ढूंढने में पुलिस लगी हुई है। रानी दहरा जलप्रपात के दूसरे झरने में डूबने से मौत हुई।

नहाने के दौरान हुआ हादसा

मिली जानकारी के अनुसार, युवक तुषार साहू स्कोर्पियो वाहन से अपने 6 दोस्तों के साथ कबीरधाम जिला मुख्यालय से 35 किलोमीटर दूर स्थित रानीदहरा जलप्रपात घूमने आए थे। ये सभी दोस्त लगभग 4 बजे एक साथ वाटरफॉल में नहा रहे थे, तभी तुषार साहू अचानक डूबने लगे। दोस्तों को लगा नहा रहा है, लेकिन युवक पानी के तेज बहाव में नीचे गहरे खाई में बहकर डूब गए, जिसे उसके दोस्तों ने बचाने का प्रयास किया. लेकिन, नहीं बंचा पाए।

पहले भी जा चुकी है कई लोगों की जान

जिले के बोड़ला ब्लॉक में स्थित रानीदहरा जलप्रपात में लगभग 80 फ़ीट ऊंचाई से पानी गिरता है। यह स्थल पर्यटन के रूप से काफी मशहूर हो चुका है। यहां स्थानीय लोगों के साथ-साथ पूरे प्रदेश से पर्यटक आते हैं। इसके बाद भी यहां जिला प्रशासन और वन विभाग के द्वारा सुरक्षा का कोई इंतजाम नहीं किया गया है। इसी के चलते पिछले वर्ष तीन युवकों की डूबने से मौत हो गई थी। इससे पहले तीन लोगों का फिसलकर गिरने व डूबने से मौत हो चुकी है। फिर भी यहां सुरक्षा के लिहाज से कोई कुछ नहीं किया गया है।

सुरक्षा व्यवस्था की आवश्यकता

रानीदहरा जलप्रपात को देखने हर साल बरसात में लोगों की भीड़ उमड़ती है और लोग परिवार सहित यहां आते है। जलप्रपात को देखने पहाड़ के ऊपर बने जर्जर सीढ़ियों से चढ़कर जाना पड़ता है। जिस रास्ते वहां तक जाते है, वह महज 5 फ़ीट चौड़ा है और इसके एक ओर पहाड़ और दूसरे ओर गहरी खाई है। सुरक्षा के दृष्टिकोण से कोई साधन नहीं है। जबकि, यहां के स्थानीय लोग समिति बनाकर पर्यटकों से एंट्री के नाम पर वसूली करते हैं।

क्या पार्टी का अस्तित्व खत्म होने का इंतजार कर रहा है शीर्ष नेतृत्व?

(पेज 1 का शेष)

पुराने लोगों को अनदेखा करना पड़ रहा भारी

कांग्रेस पार्टी ने मध्यप्रदेश में पिछले दो सालों में वरिष्ठ और अनुभवी राजनेताओं को जिस ढंग से अनदेखा करना आरंभ किया वह पार्टी की हार का सबसे प्रमुख कारण है। यह सही है कि नए लोगों को आगे आना चाहिए लेकिन अगर पुराने लोगों को पूरी तरह से अनदेखा करके नए लोगों के हाथ में कमान दी जाती है तो निश्चित ही यह पार्टी की बड़ी भूल साबित हो सकती है। और हुआ भी कुछ ऐसा ही। पार्टी ने पूर्व मुख्यमंत्री कमलनाथ को जिस ढंग से अनदेखा करके पटवारी को खुला मैदान खेलने के लिए दिया है पटवारी उस मैदान में पहली ही गेंद पर क्लीन बोल्ड हो गए। यही नहीं उपचुनाव में भी वे सफल नहीं हो पाए।

बेरोजगारी को लेकर गैर जिम्मेदार है मोहन यादव सरकार- पूर्व सीएम कमलनाथ

मध्य प्रदेश सरकार बेरोज़गारी की समस्या को लेकर पूरी तरह ग़ैर ज़िम्मेदार है। मध्य प्रदेश की सरकार युवाओं को रोज़गार देने का कोई नया इंतज़ाम नहीं कर रही है और हद तो यह है कि उसके पास रोज़गार देने और बेरोजगारों की बढ़ती संख्या को लेकर सही आंकड़े तक नहीं हैं। विधानसभा में सरकार बेरोज़गारी को लेकर परस्पर विरोधी जवाब दे रही है। इससे स्पष्ट हो जाता है कि रोज़गार और नौकरी मोहन यादव सरकार की प्राथमिकताओं में कहीं नहीं है। इसके उलट मध्य प्रदेश में नौकरी और रोज़गार देने के नाम पर घोटाले रोज़ बढ़ते जा रहे हैं। पूर्व कमलनाथ का कहना है कि मैं मुख्यमंत्री से पूछना चाहता हूँ कि प्रदेश के नौजवानों का भविष्य अंधकार में डालकर आख़िर वह और उनकी सरकार क्या हासिल करना चाहते हैं? अगर नौजवान बेरोज़गार रहेंगे तो प्रदेश का भविष्य कैसे उज्ज्वल हो सकता है? कमलनाथ का मानना है कि मध्य प्रदेश और पूरे देश में नौकरियों में कमी आ रही है। कर्मचारी भविष्य निधि संगठन EPFO के आंकड़ों के मुताबिक़ वर्ष 2023-24 में देश में सात लाख नौकरियां कम हुई है और मध्यप्रदेश में 29 हज़ार नौकरी कम हुई हैं। यह अत्यंत चिंताजनक मामला है। प्रदेश में पहले ही बेरोजगारों

प्रदेश कांग्रेस नेताओं में अंतर्कलह कहीं प्रदेश अध्यक्ष पटवारी के खिलाफ असंतोष का सूचक तो नहीं

की बड़ी संख्या है, जो कभी पटवारी भर्ती घोटाले, तो कभी नर्सिंग घोटाले, तो कभी व्यापम घोटाले, तो कभी आरक्षक भर्ती घोटाले से परेशान हैं। अब आंकड़े बता रहे हैं कि निजी क्षेत्र में भी नौकरी घटती जा रही है। सवाल यह है कि अगर सरकार न तो सार्वजनिक क्षेत्र में और न ही निजी क्षेत्र में नौकरी उपलब्ध करा रही है तो आख़िर नौकरियों को लेकर उसकी नीति क्या है? यह अत्यंत दुर्भाग्य की बात है कि एक तरफ़ नौकरियां घट रही हैं, रोज़गार के अवसर कम हो रहे हैं और सरकारी भर्ती प्रक्रिया पूरी तरह संदिग्ध होती जा रही है तो दूसरी तरफ़ प्रदेश सरकार सिर्फ़ इवेंटबाज़ी में व्यस्त है और कपोल कल्पित वादे करने में जुटी हुई है। प्रदेश का नौजवान इस अन्याय को बर्दाश्त नहीं करेगा और कांग्रेस पार्टी हर क़दम पर नौजवानों के साथ खड़ी है।

अजेय हैं पूर्व मुख्यमंत्री कमलनाथ

पूर्व मुख्यमंत्री कमलनाथ का यदि राजनीतिक करियर देखा जाए तो उसमें एक नहीं कई उपलब्धियां नजर आती हैं। राज्य में प्रदेश अध्यक्ष, मुख्यमंत्री से लेकर केंद्रीय मंत्री और कई प्रमुख समितियों में बतौर सदस्य शामिल कर सरकार और पार्टी ने अनके अनुभवों का लाभ लिया है। कमलनाथ ही वह व्यक्तित्व हैं जो लंबे समय तक छिंदवाड़ा जिले से अजेय थे और सांसद रहते हुए उन्होंने जिले में विकास का अद्भुत और अविश्वसनीय मॉडल खड़ा किया जो आज पूरे देश के लिए चर्चा का केंद्र है। ऐसे में पार्टी के सदस्यों के बीच हो रहे भितरघात के कारण कमलनाथ को पहले सत्ता से हाथ धोना पड़ा और उसके बाद विधानसभा, लोकसभा और फिर उपचुनाव ने हार का सामना करना पड़ा। सूत्रों के अनुसार यह सब पटवारी और भाजपा आलाकमान की सांठगांठ के बीच हो था है।

पटवारी और बीजेपी में समन्वय तो नहीं

बेरोजगारी को लेकर जो हल्ला मचा है कमलनाथ उस पर पहले ही जता चुके हैं चिंता

सूत्रों के अनुसार नर्सिंग घोटाले के प्रमुख याचिकाकर्ता रवि परमार द्वारा एक बहुत बड़े घोटाले की जानकारी सामने लाई गई। लेकिन पटवारी ने प्रदेश अध्यक्ष और विपक्षी दल के प्रमुख नेता होने के नाते भी परमार का साथ उतना नहीं दिया जितनी परमार को अपेक्षा थी। सूत्र बताते हैं कि शायद भाजपा और पटवारी के बीच विद्रोह न करने और शांत रहने संबंधी कोई आपसी समझौता हुआ है जिसके बदले उन्हें बड़ा लाभ दिए जाने की योजना है। सवाल यह है कि अगर पटवारी जैसे विपक्षी दल के प्रमुख नेता ऐसा फैसला करते हैं तो वह दिन दूर नहीं जब कांग्रेस को राज्य में विपक्षी दल से भी हाथ धोना पड़ेगा।

राज्य में कांग्रेस के खत्म होने का बिगुल बज गया

प्रदेश कांग्रेस पार्टी के नेताओं में जिस तरह से अंतर्कलह चल रही है और सभी अलग-अलग दल ने विभाजित होने का प्रयास कर रहे हैं। यह संकेत पार्टी के राज्य से खत्म होने के हैं। लेकिन पार्टी आलाकमान की आंखों में कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे और नेता जयराम नरेश ने जो पट्टी आंख में बांधी हुई है समय रहते उस पट्टी को राहुल, प्रियंका और सोनिया गांधी को खोलना होगा और एक बार फिर अपने पुराने और अनुभवी नेताओं पर विश्वास कर उन्हें जिम्मेदारी सौंपनी होगी। तभी पार्टी का अस्तित्व बचेगा अन्यथा वह दिन दूर नहीं जब कांग्रेस पार्टी सिर्फ स्मृतियों में रह जाएगी।

इंदौर घटना में जो हुआ वह प्रदेश अध्यक्ष जीतू पटवारी की असफलता है

हाल ही में इंदौर में एक घटना घटी है। यह घटना प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष जीतू पटवारी की असफलता का जीता जागता नमूना है। पहले हम उस घटना का जिक्र करते हैं। पिछले दिनों शहर में 11 लाख पौधे लगाने का निमंत्रण देने इंदौर कांग्रेस कार्यालय पहुंचे थे। मंत्री कैलाश विजयवर्गीय की आवभगत नगर अध्यक्ष सुरजीत सिंह चड्ढा और जिला अध्यक्ष सदाशिव यादव ने की थी। इन दोनों को यह आवभगत काफी भारी पड़ी। दोनों को प्रदेश कांग्रेस कमेटी ने निलंबित कर दिया। जबकि सुरजीत सिंह चड्ढा का कहना है कि कैलाश विजयवर्गीय का स्वागत उन्होंने प्रदेश अध्यक्ष जीतू पटवारी के कहने पर ही किया है। सुरजीत सिंह चड्ढा ने कहा कि सुबह प्रदेश अध्यक्ष जीतू पटवारी का फोन आया कि कैलाश विजयवर्गीय आ रहे हैं उनका ठीक से स्वागत करना। अब यहां सवाल उठ रहा है कि किसी स्थानीय नेता को प्रदेश अध्यक्ष का आदेश कैसे ठुकराया जा सकता है। सुरजीत सिंह चड्ढा ने तो वहीं किया जैसा उन्हें आदेशित किया गया है। यहां पटवारी की काबिलियत पर भी प्रश्नचिंह लग रहा है। आखिर कैसे उनका निलंबन किया गया है। यह पटवारी के दोहरे चरित्र को प्रदर्शित कर रहा है।

22 चक्का कंटेनर अनियंत्रित होकर पलटा, एक की मौत दो घायल

-अमित राजपूत

जगत प्रवाह. सागर। देवरी थाना क्षेत्र के देवरी रहली मार्ग से एक भीषण सड़क हादसा सामने आया है। जिसमें एक टैंकर कंटेनर अनंत्रित होकर पलट गया ,टैंकर कंटेनर में सवार तीन लोग केबिन में बुरी तरह से फंस गए, वहीं एक व्यक्ति की दर्दनाक मौत हो गई और दो अन्य घायल व्यक्तियों को कड़ी मशक्कत के बाद सुरक्षित निकाला गया। जानकारी के अनुसार देवरी रहली मार्ग पर ड़ोगर सलैया के अंधे मोड़ पर एक 22 चक्का कंटेनर जो गाडरवारा से दमोह की ओर जा रहा था, तभी रास्ते में अनियंत्रित होकर सड़क किनारे पलट गया जिसमें कंटेनर की केबिन में तीन लोग ड्राइवर एवं क्लीनर सहित एक अन्य बुरी तरह से फंस गये। घटना की सूचना राहगीरों ने डायल 100 पर दी, सूचना मिलने पर डायल 100 के पॉयलेट तत्काल मौके पर पहुंचे और ग्रामीणों की मदद से केबिन में फांसे तीनों लोगों को निकालने का प्रयास शुरू किया। इस रेस्क्यू में दो जेसीबी मशीन एक हाइड्रा मशीन सहयोग लिया गया। साथ ही ग्राम डोंगर सलैया निवासी ऋतुराज चौहान ने भी कंटेनर में फांसी लोगों को निकालने में कड़ी मेहनत की। करीब 02 घंटे तक कड़ी मेहनत और मसक्कत के बाद छत्रपाल पटेल 24 वर्ष और रवि यादव 27 वर्ष को सुरक्षित बाहर निकला गया, इस दौरान एक व्यक्ति मोहित पटेल उम्र 24 वर्ष की घटना स्थल पर दर्दनाक मौत हो गई। दोनों घायलों को 108 की सहायता से देवरी के सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में प्राथमिक उपचार के लिए भेजा, प्राथमिक उपचार के बाद दोनों को जिला चिकित्सालय रेफर कर दिया गया है। उक्त कंटेनर टैंकर ट्रक में गन्ने की राख भरी हुई थी, जो गाडरवारा से दमोह जा रहा था। इसी बीच सड़क हादसे का शिकार हो गया। (जगत फीचर्स)

झोलाछाप डॉक्टर बेखौफ होकर अवैध क्लीनिक का कर रहे संचालन

-बद्रीप्रसाद कौरव

जगत प्रवाह. नरसिंहपुर। जिले के नगरों और ग्रामीण इलाकों में झोलाछाप डाक्टरों की बाढ़ आई हुई है। जगह-जगह पर झोलाछाप डॉक्टर तामझाम के साथ क्लीनिक संचालित कर मरीजों की जान के साथ खिलवाड़ कर रहे हैं। इतना ही नहीं जागरूक नागरिकों की शिकायत पर कोई कार्रवाई ना होने से अधिकारियों की कार्यप्रणाली पर भी सवाल उठ रहे हैं। जिले के ग्रामीण क्षेत्रों में ऐसे डाक्टर खुद की क्लीनिक खोल डॉक्टर बनकर गभीर बीमारियों का इलाज करने लगे जबकि इनके पास न सम्बन्धित योग्यता हैं और न ही उपचार संबन्धी लाइसेंस हैं। जिले के अंतर्गत नगर सहित अनेक गांवों के झोलाछाप डॉक्टर लम्बे समय से सस्ती दवा दिलाने के नाम पर गरीबों का इलाज कर रहे हैं। कई बार तो मामला गभीर हो जाता है, जिससे मरीजों को गंभीर हालत में जबलपुर या नागपुर रिफर कर दिया जाता है। इसके बाद भी स्वास्थ्य विभाग की मिलीभगत के कारण झोलाछाप डॉक्टरों पर कार्यवाही नहीं की जाती। जबकि प्रदेश सरकार द्वारा गत 15 जुलाई को प्रदेश के सभी कलेक्टर एवं सीएमएचओ को पत्र जारी कर निर्देशित किया गया था कि क्षेत्र में झोला छापी द्वारा संचालित क्लीनिक पर कार्यवाही की जानकारी चाही गई थी। मगर जिले में झोलाछाप डॉक्टर बेखौफ होकर अवैध क्लीनिक का संचालन कर रहे हैं। क्लीनिक 24 घटे खुली रहती हैं और साथ में खून, पेशाब की जांच भी 10वीं पास लोग कर रहे हैं। इस मौसम में बीमारियों ने पैर पसारने लगी सरकारी अस्पतालों में इलाज के लिए लम्बी कतारें लगा रही हैं। उसका फायदा झोलाछाप डॉक्टर बेखौफ उठा रहे हैं।

(जगत फीचर्स)

श्री नरेन्द्र मोदी
माननीय प्रधानमंत्री

छत्तीसगढ़

खुशियों का गढ़

श्री विष्णु देव साय
मुख्यमंत्री, छत्तीसगढ़

हम खुश हैं
क्योंकि हम किसानों से किए गए वादे पूरे हुए हैं। हमें दो साल का बकाया बोनस मिला है।

हम खुश हैं क्योंकि नई शिक्षा नीति के तहत अब हम क्षेत्रीय बोली-भाषा में भी पढ़ पाएंगे। हमारी पढ़ाई को आसान बनाने के लिए हमारे विष्णु देव सरकार को बहुत-बहुत धन्यवाद।

हम खुश हैं
क्योंकि हम सरकार को ₹3100 प्रति क्विंटल की दर से धान बेचते हैं, जो भारत में सबसे अधिक कीमत है। इस साल राज्य में रिकॉर्ड 145 लाख मीट्रिक टन धान की खरीदी हुई है।

हम खुश हैं
क्योंकि हमें कई सालों के बाद प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत अपना खुद का पक्का घर मिला है।

हम खुश हैं क्योंकि हमारी तरह राज्य की 70 लाख बहनों को महतारी वंदन योजना से प्रति माह ₹1000 मिलते हैं, जिससे हम आत्मनिर्भर हो रहे हैं।

हम खुश हैं क्योंकि हमें हमारे परिश्रम का सम्मान मिला- तेंदूपत्ता संग्रहण की दर ₹4000 से ₹5500 बढ़ा दी गई और खरीदी की समय-सीमा भी बढ़ाई गई। हरा सोना अब बना खरा सोना।

हम खुश हैं
क्योंकि हम युवाओं को सरकारी भर्तियों के लिए निर्धारित आयु में 5 वर्ष की छूट मिली है। अब रोज़गार के नए रास्ते खुल गए।

हम खुश हैं
क्योंकि जनदर्शन में हज़ारों लोग प्रदेश के मुखिया से मिल पा रहे हैं, अपनी समस्याएं सुनाकर त्वरित निवारण पा रहे हैं।

हम खुश हैं क्योंकि प्रदेश में भ्रष्टाचार के खिलाफ तेज़ी से कार्रवाई की जा रही है। विष्णु देव सरकार की ज़ीरो टॉलेरेंस नीति राज्य में सुशासन ला रही है।

हम खुश हैं
क्योंकि हमारे श्रवण कुमार विष्णु देव हमें निःशुल्क अयोध्या-काशी तीर्थ भ्रमण करा रहे हैं। इस जीवन में हमने रामलला दर्शन योजना से जीवन का पुण्य पा लिया।

हमसे जुड़ने के लिए
QR CODE स्कैन करें।

RO No. 12862/1

हमने बनाया है, हम ही सँवारेंगे

Visit us : ChhattisgarhCMO ChhattisgarhCMO ChhattisgarhCMO ChhattisgarhCMO DPRChhattisgarh DPRChhattisgarh www.dprcg.gov.in

PM SHRI

विष्णु के सुशासन से
सँवर रहा छत्तीसगढ़

श्री नरेन्द्र मोदी
माननीय प्रधानमंत्री

श्री विष्णु देव साय
मुख्यमंत्री, छत्तीसगढ़

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के साथ
बेहतर स्कूल अब हर बच्चे का अधिकार

पीएम श्री

प्रधानमंत्री स्कूल फॉर राईजिंग इंडिया

शिक्षा प्रणाली और अधोसंरचना में दूरदर्शी परिवर्तन का दौर

- पीएमश्री योजना में पहले चरण में राज्य के 193 प्राथमिक स्तर के स्कूल और 18 उच्च माध्यमिक स्तर के स्कूलों को विकसित किया जा रहा है। अगले चरण में 52 स्कूल स्वीकृत
- पीएम श्री योजना के तहत स्कूलों में आधुनिक भवन अधोसंरचना के साथ, परिवर्तनकारी सुविधायुक्त शिक्षा देने की तैयारी
- योजना के तहत स्कूलों का ग्रीन स्कूल, स्मार्ट क्लास, डिजिटल लायब्रेरी, आधुनिक प्रयोगशाला, खेल सुविधा, कैरियर कांउसिलिंग जैसे घटकों के साथ अपग्रेडेशन
- वैश्विक स्तर की शिक्षा देने के लिए शिक्षकों को उच्च शिक्षा– शिक्षण संस्थानों व फैकल्टी के माध्यम से प्रशिक्षण की व्यवस्था, इसके लिए बजट में 60 करोड़ का प्रावधान

RO No. 12862/1

छत्तीसगढ़ जनसंपर्क

हमने बनाया है, हम ही सँवारेंगे

मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय से जुड़ने के लिए यह क्यू आर कोड स्कैन करें

Visit us : ChhattisgarhCMO ChhattisgarhCMO ChhattisgarhCMO ChhattisgarhCMO DPRChhattisgarh DPRChhattisgarh www.dprcg.gov.in

सम्पादकीय

देश में पूर्वोत्तर का प्रथम 'विश्व धरोहर स्थल' है मोइदम

26 जुलाई को असम के चराइदेव स्थित अहोम साम्राज्य के 'मोइदम' को विश्व धरोहर की सूची में शामिल कर लिया गया। यह संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक संगठन (यूनेस्को) द्वारा सूचीबद्ध भारत का 43वां, तो देश में पूर्वोत्तर का प्रथम 'विश्व धरोहर स्थल' है। यह साम्राज्य असम में 13वीं से 19वीं शताब्दी के आरंभ तक वजूद में रहा। साधारण व्यक्तियों की तरह देश और समाज भी अपने अस्तित्व के प्रति 'स्मृतिलोप' रूपी रोग का शिकार होकर और बिना किसी दर्द को महसूस किए समाप्त हो जाता है। आठवीं शताब्दी से भारत में इस्लामी आक्रांताओं (कासिम, गौरी, गजनवी, खिलजी, बाबर, टीपू सुल्तान सहित) के हमलों और मजहबी उन्माद के बाद वर्ष 1757 में रॉबर्ट क्लाइव के नेतृत्व में कंपनी सेना ने सिराजुद्दौला को हराकर ब्रिटिश राजकाज स्थापित किया था। इस्लामी कालखंड में भारतीय अस्मिता के प्रतीकों को जमींदोज किया गया, तो तलवार के बल पर हिंदू-बौद्ध-जैन-सिखों का जबरन मतांतरण। परंतु स्थानीय बाशिंदों ने कभी भी इस्लामी आक्रमणकारियों को खुद से श्रेष्ठ नहीं समझा और वे अपनी सांस्कृतिक पहचान-परंपराओं के प्रति गौरवान्वित रहे।

अंग्रेज होशियार और चालाक थे। उन्होंने स्थानीय भारतीयों को न केवल शारीरिक, बल्कि उन्हें उनकी मूल जड़ों से काटकर मानसिक तौर पर भी अपना गुलाम बनाना शुरू किया। जब वामपंथियों और जिहादियों की मदद से भारत को तकसीम करके ब्रितानी 1947 के बाद चले गए, तब तक वे भारत के सामूहिक मानस को क्षीण कर चुके थे। यह स्थिति तुरंत प्रभाव से बदलनी चाहिए थी और इसकी शुरूआत सोमनाथ मंदिर के पुनर्निर्माण के साथ प्रारंभ भी हुई। परंतु 30 जनवरी 1948 को गांधीजी की नृशंस हत्या और 15 दिसंबर 1950 को सरदार पटेल के निधन पश्चात इस सांस्कृतिक पुनरुत्थान पर रोक लग गई और उसपर 'सांप्रदायिकता' का मुलम्मा चढ़ा दिया गया।

ऐसा करने वालों में सबसे ऊपर स्वतंत्र और खंडित भारत के पहले प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू थे, जो अन्य 'भारतीयों' की भांति ब्रितानियों के 'स्मृतिलोप अभियान' का शिकार रहे। पं.नेहरू मार्क्सवाद से बहुत प्रभावित थे और वे लॉर्ड थॉमस बैबिंगटन मैकॉले द्वारा स्थापित उस शिक्षण प्रणाली (1835-36) के अव्वल दर्जे वाले उत्पाद थे, जिसमें 'रक्त-रंग से भारतीयों' को 'पसंद-नापसंद, विश्वास, नैतिकता और बुद्धि' से अंग्रेज बनाने की नीति थी। विभाजन के बाद वामपंथियों ने मैकॉले-मानसपुत्रों के साथ मिलकर अपनी भारत-हिंदू विरोधी मानसिकता के तहत देश के वास्तविक इतिहास को और तहत-नहस कर दिया। दशकों बाद विशेषकर वर्ष 2014 के बाद इस स्थिति में स्वागत योग्य और चरणबद्ध वांछनीय सुधार हो रहा है।

हाल ही में राष्ट्रपति भवन स्थित दरबार हॉल और अशोक हॉल का नाम 95 साल बाद बदलकर क्रमशः 'गणतंत्र मंडप' और 'अशोक मंडप' किया गया है। इससे पहले गत वर्षों में नए संसद भवन में प्राचीन चोल साम्राज्य के प्रतीक 'सेंगोल' (राजदंड) की स्थापना, काशी विश्वनाथ धाम का 350 वर्ष पश्चात विस्तारीकरण-पुनरोद्धार, न्यायिक निर्णय के बाद अयोध्या में भव्य राम मंदिर का पुनर्निर्माण, धारा 370-35ए का संवैधानिक क्षरण और प्रत्येक वर्ष 26 दिसंबर को सिख पंथ के दसवें गुरु गोबिंद सिंह साहिबजी के पुत्रों- साहिबजादे बाबा जोरावर सिंह और बाबा फतेह सिंह के बलिदान की याद में 'वीर बाल दिवस' के साथ प्रत्येक 14 अगस्त को 'विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस' के रूप में मनाने आदि की घोषणा की गई थी।

इसी कड़ी में अहोम 'मोइदम' का यूनेस्को की 'विश्व धरोहर सूची' में शामिल होना अतुलनीय है। यह पिरामिड सरीखी अनूठी टीलेनुमा संरचना हैं, जिनका इस्तेमाल छह सदियों तक ताई-अहोम वंश द्वारा अपने राजवंश के सदस्यों को उनकी प्रिय वस्तुओं के साथ दफनाने के लिए किया जाता था। 'मोइदम' गुंबददार कक्ष (चौ-चाली) होते हैं, जो दो मंजिला होते हैं, जिनमें प्रवेश के लिए मेहराबदार मार्ग होता है और अर्धगोलाकार मिट्टी के टीलों के ऊपर ईंटों और मिट्टी की परतें बिछाई जाती हैं। 'मोइदम' दफन पद्धति अभी भी कुछ पुजारी समूहों और चाओ-डांग कबीले (शाही अंगरक्षक) द्वारा प्रचलित है।

सियासी गहमागहमी

कमलनाथ के सवालों का जबाव देने से क्यों बचती है भाजपा?

पिछले दिनों कैग की रिपोर्ट में खुलासा हुआ है कि मध्यप्रदेश की सरकार भारी कर्ज में डूबी हुई है। पहले से मौजूद कर्ज को पटाने के लिए भी मध्यप्रदेश सरकार को और कर्ज लेना पड़ रहा है। ऐसे हालातों को देखकर पूर्व सीएम कमलनाथ ने सत्ताधारी दल पर तीखे प्रहार किए हैं। लिये कमलनाथ के इन प्रहारों पर भाजपा नेताओं ने कहीं कोई प्रतिक्रिया नहीं दी। आखिर कमलनाथ के सवालों का जबाव देने से बचती क्यों है भाजपा सरकार। जाहिर है कि कमलनाथ ने सरकार से सिर्फ यह प्रश्न पूछा था कि मध्य प्रदेश को कर्ज के दलदल में इस तरह डुबा दिया गया है ऐसे में कर्ज के हालात पर कोई चिंता क्यों नहीं करता। अब देखने वाली बात यह है कि आखिर कब तक भाजपा सरकार व उनके नेता कमलनाथ के तीखे प्रहारों का जबाव देने से बचते हैं।

बघेल की गिरफ्तारी के लिये भी फिर सक्रिय हुई साय सरकार

महादेव बेटिंग एप केस में भूपेश बघेल के खिलाफ एफआईर पर फिर से कार्यवाही के आदेश होते ही प्रदेश का सियासी पारा सातवें आसमान पर पहुंच गया है। जिन धाराओं के तहत केस दर्ज किया गया है उन धाराओं के तहत गिरफ्तारी भी संभव है। ऐसे में अब ये सवाल उठने लगे हैं कि क्या चुनाव से पहले गिरफ्तारी भी संभव है। कानून के जानकार इसे गंभीर विषय मान रहे हैं। पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल के खिलाफ प्रवर्तन निदेशालय में एफआईआर दर्ज किया गया है। एफआईआर में दर्ज होने की जानकारी जैसे ही कांग्रेस को लगी कांग्रेस ने तुरंत मोर्चा संभाल लिया। कांग्रेस के दिग्गज नेताओं ने एक सुर में कहा कि ये राजनीतिक षडयंत्र है। बीजेपी प्रायोजित साजिश है। बीजेपी कांग्रेस को ट्रैप करने की कोशिश कर रही है।

हफ्ते का कार्टून

ट्वीट-ट्वीट

उत्तराखंड में भारी बारिश के कारण कई लोगों की मृत्यु का समाचार अत्यंत पीड़ादायक है।
शोकाकुल परिजनों के प्रति गहरी संवेदनाएं व्यक्त करता हूं। साथ ही सभी श्रद्धालुओं और स्थानीय नागरिकों की सुरक्षा की आशा करता हूं। सभी कांग्रेस नेताओं और कार्यकर्ताओं से अनुरोध है कि वो राहत और बचाव कार्य में प्रशासन को हर संभव सहायता प्रदान करें। इस दुख की घड़ी में मेरी सहानुभूति सभी पीड़ित परिवारों के साथ है।

-राहुल गांधी
कांग्रेस नेता @RahulGandhi

केरल के वायनाड में भूस्खलन से सैकड़ों लोगों की मौत के बाद अब उत्तराखंड और हिमाचल से भी बादल फटने और बड़ी संख्या में मुख्य सड़कें क्षतिग्रस्त होने की खबरें आ रही हैं।

-कमलनाथ
प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष
@OfficeOfKNath

राजवीरों की बात

आरिफ भाई के इंतकाल खबर सुनकर क्षेत्र के लोगों के छलक उठे आंसू

समता पाठक/जगत प्रवाह

कांग्रेस नेता और पूर्व विधायक आरिफ अकील का इंतकाल हो गया है। आरिफ राजधानी भोपाल के उत्तर विधानसभा क्षेत्र के एकमात्र ऐसे विधायक थे जिनके अभेद किले को न तो भाजपा और न ही कोई और पार्टी कभी फतह कर पाई। आमजन के बीच में आरिफ भाई के नाम से मशहूर रहे आरिफ अकील का यूं चले जाने से उत्तर विधानसभा में गमगीन माहौल है। लोगों का स्नेह आरीफ अकील के प्रति इतना अधिक था कि उनके इंतकाल की खबर सुनकर लोग हतप्रभ रह गये और उन्होंने तीन दिनों तक कामकाज ठप कर उनका शोक मनाया। एक छात्र नेता के रूप में अपनी राजनीति की शुरुआत करने वाले आरिफ अकील भोपाल उत्तर विधानसभा सीट लगातार 1998 से जीतते आ रहे हैं. मध्य प्रदेश में 1977 में वे कांग्रेस की छात्र ईकाई एनएसयूआई के उपाध्यक्ष नियुक्त किये गये थे। राजनीतिक करियर में उन्होंने विधायक के रूप में पहला चुनाव 1990 में जीता। वे निर्दलीय उम्मीदवार थे और उन्होंने कांग्रेस के नेता और पूर्व मंत्री हसनात सिद्दीकी को हराया।1993 में उन्होंने जनता दल के बैनर तले चुनाव लड़ा पर वे भाजपा के रमेश शर्मा से हार गए। बाद में वे एमपी वक्फ बोर्ड और बार काउंसिल के सदस्य भी बने। पर उनकी राजनीति एक बार फिर उनके कांग्रेस में शामिल होने के बाद चमकी। 1998 के विधानसभा चुनाव में कांग्रेस से लड़े और अबकी बार भाजपा के रमेश शर्मा को हरा के बाज़ी जीती। उसके बाद जो जीत का सिलसिला चला वो अभी तक थमा नहीं। आज उनको 'शेरे भोपाल' कहा जाता है। पिछले तीन चुनावों में जहां राज्य में भाजपा की सत्ता कायम हुई वहीं भोपाल उत्तर आरिफ अकील का गढ़ बना हुआ है। उनके एक नज़दीकी सहयोगी कहते हैं कि 'आरिफ भाई काम में भेदभाव नहीं करते. उनका मानना है कि जो मेरे पास आ गया वो मेरा है।

उनकी विधानसभा क्षेत्र का कोई भी फरियादी उनके पास आता है तो वो समस्या का निदान करने के लिए तैयार होते हैं। आरिफ के सहयोगी कहते हैं कि वे ये भेदभाव नहीं करते कि कौन उनकी मदद मांगने आया है- वह कांग्रेस का है या बीजेपी का। पब्लिक जानती है कि कौन उनके काम का है। 'अगर कभी कोई झगड़ा सुलझाने के लिए आता है तो आरिफ भाई पुलिस को फोन कर सुलह सफाई करवाने के लिए कहते हैं, तो फरियादी को काम पूरा करवाने के लिए चक्कर नहीं काटने पड़ते। वे खुद पीछे पड़ समस्या का समाधान करवाते हैं। इस बार 230 विधानसभा सीटों में जिस एकमात्र सीट पर भाजपा ने मुस्लिम उम्मीदवार उतारा है वह है भोपाल उत्तरी सीट। यहां उन्होंने फातिमा रसूल सिद्दीकी को खड़ा किया है। ये वही सीट जो कांग्रेस का गढ़ मानी जाती है और जहां 2013 में अकील ने भाजपा के उम्मीदवार आरिफ बेग को 6000 मतों से हराया था। पर ज्यादा रोचक बात इस मुकाबले की ये है कि फातिमा, रसूल अहमद सिद्दीकी की पुत्री हैं। रसूल अहमद सिद्दीकी आरिफ अकील के बीच पुराना इतिहास है। सिद्दीकी इसी सीट से कांग्रेस से विधायक थे। ये 1980 और 1985 में कांग्रेस के यहां से उम्मीदवार थे और उनको 1990 में अकील ने स्वतंत्र उम्मीदवार के रूप में हराया था। बीएड, एलएलबी की पढ़ाई कर चुके आरिफ अकील चुनाव एफीडेविट में स्वयं को किसान और एडवोकेट बताते हैं. उनके खिलाफ दो मामले दर्ज हुए हैं। उनकी पत्नी साारिया अकील को हाउस वाइफ और किसान बताया गया है। उनके एक बेटी इरम है और तीन बेटे माजिद, आतिफ और आबिद हैं। अब अकील के पुत्र आतिफ भी यूथ कांग्रेस का हिस्सा हैं और राजनीति में सक्रिय हो रहे हैं। अकील कहते हैं, 'उनकी बात तब करेंगे जब वो बड़े होंगे। अकील का दावा है कि 'इस बार मैं रिकॉर्ड मार्जिन से जीतूंगा। लिख लें रिकॉर्ड जीत होगी। यही नहीं उनको विश्वास है कि राज्य में कांग्रेस को 150 से ज्यादा सीटें आएंगी और सरकार कांग्रेस की ही बनेगी।

प्रकृति की गोद में बसा जानापाव, नियाग्रा फॉल्स सी खूबसूरती झलकाता पातालपानी

बारिश में इंदौर के करीब नजर आते हैं प्राकृतिक सौंदर्य के नजारे

जगत प्रवाह. भोपाल। बारिश के मौसम में प्रकृति का सौंदर्य देखते ही बनता है। इस दौरान इंदौर के आसपास भी हमें विश्वस्तरीय पर्यटन का आनंद मिल सकता है। बारिश में इंदौर प्राकृतिक सौंदर्य के नजारे भी बिखेरता है। इंदौर से महज कुछ ही दूरी पर इन स्थानों पर पहुंचकर हम प्रकृति से संवाद कर सकते हैं। पातालपानी का जलप्रपात जहां नियाग्रा फॉल सा नजर आता है, इस सौंदर्य को देखने के लिए रेलवे ने यहां हेरिटेज ट्रेन भी शुरू की है। वहीं जानापाव की पहाड़ी हरियाली की चादर औढ़े हमें आकर्षित करती है। इसके साथ ही चोरल, रालामंडल अभ्यारण्य सहित कई ऐसे स्थान हैं जो आपके विकएंड को सुहाना सफर दे सकते हैं।

वर्षा ऋतु सारी प्रकृति से सौंदर्य को ही बदल देती है। प्राणियों के लिए वर्षा अमृत के बरसने के समान तुलनीय है। हर कण अपनी एक अलग छवि के साथ मुस्कुरा देता है, प्रकृति की इस खूबसूरती को देखकर। प्रकृति में वर्षा ऋतु में चारों ओर झम झम बूंदे बरसती हैं। बिजलियों की खनक से मन के सारे बंद दरवाजे खुल जाते हैं। वर्षा की बूंदों में भीग कर सारी धरा पून खिल उठती है। नए कोपल अंकुरित होकर निकलने लगती है। जीवन का धरा पर प्रसार होने लगता है। उत्साह, उमंग, संपन्नता का चारों और साम्राज्य छा जाता है। सारी नीरसता गायब हो जाती है। शरीर से लेकर आत्मा तक सभी एक शांति का अनुभव करते हैं।

हमें जीवित रहने के लिए पानी की आवश्यकता होती है। वर्षा अपने साथ जीवन का आधार पानी लेकर आती है। वर्षा के साथ जीवन में बदलाव ही आता है। शरीर को उमस, गर्मी, नीरसता से भी उबारती है। इसलिए वर्षा आने पर सभी प्राणी उमंग और उत्साह में जश्न मनाने लगते हैं। वर्षा ऋतु सारी प्रकृति से सौंदर्य को ही बदल देती है। प्राणियों के लिए वर्षा अमृत के बरसने के समान तुलनीय है। हर कण अपनी एक अलग छवि के साथ मुस्कुरा देता है प्रकृति की इस खूबसूरती को देखकर। वर्षा ऋतु, किसानों के लिये फसलों के लिहाज से बहुत फायदेमंद रहती है। वर्षा ऋतु में जीव जन्तु भी बढ़ने लगते हैं। ये हर एक के लिये शुभ मौसम होता है और सभी इसमें खुशी के साथ ढेर सारी मस्ती करते है। इस मौसम में हम सभी पके हुये आम का लुत्फ उठाते है। वर्षा से फसलों के लिए पानी मिलता है तथा सूखे हुए कुएं, तालाबों तथा नदियों को फिर से भरने का कार्य वर्षा के द्वारा ही किया जाता है। वर्षा ऋतु में वातावरण शुद्ध और दर्शनीय हो जाता है। प्रकृति फल और फूलों से लद जाती है।

(जगत फीचर्स)

इन स्थानों सुहाना होगा वीकेंड

पातालपानी- *इंदौर से करीब 35 किलोमीटर दूर स्थित पातालपानी झरना बारिश में प्राकृतिक सौंदर्य से भरा नजर आता है। 300 फीट उंचा यह झरना पिकनिक और ट्रेकिंग स्थल भी है। यहां पर्यटकों के लिए रेलवे द्वारा सप्ताह में दो दिन हेरिटेज ट्रेन भी चलाई जा रही है।*

जानापाव- *जानापाव समुद्र तल से 881 मीटर उंचाई पर एक पर्वत है और इंदौर-मुंबई राजमार्ग पर इंदौर से करीब 45 किलोमीटर दूर है। इसे विष्णुजी के अवतार भगवान परशुराम जी की जन्मस्थली के रूप में जाना जाता है। इसके साथ ही बारिश के दौरान यहां का प्राकृतिक सौंदर्य के साथ हरियाली की चादर औढ़े पर्वत बहुत सुकुन देता है।*

देवास- *इंदौर से लगभग 40 किलोमीटर दूर देवास नगर में माताजी की एक छोटी सी पहाड़ी है। यहां पर आप घूमने, दर्शन करने के साथ ही परिवार-दोस्तों के साथ पिकनिक का मजा भी ले सकते हैं। यहां आसपास 5 किलोमीटर की दूरी पर शंकरगढ़, नागदाह, बिलावली नामक अन्य पिकनिक स्पॉट भी हैं।*

मांडवगढ़- *इंदौर से करीब 90 किलोमीटर दूर स्थित है मांडू या मांडवगढ़। विंध्याचल पर्वत श्रृंखला पर बसा यह स्थल प्राकृतिक सौंदर्य के साथ ही अपने इतिहास के लिए भी जाना जाता है। यहां पुरातत्व धरोहरों पर आकर्षक नक्काशी और वास्तुकला देखने को मिलती है। बारिश के दौरान को इस स्थल का सौंदर्य देखते ही बनता है। यहां जहांगीर महल, जहाज महल, हिंडोला महल, रेवा कुंड, रानी रूपमती मंडल और नीलकंठ महल सहित लोहानी गुफा पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र रहती हैं।*

रालामंडल अभ्यारण्य- *इंदौर से महज 12 किलोमीटर दूर स्थित रालामंडल अभ्यारण्य आपको प्रकृति की गोद में पहुंचा सकता है। चारों ओर से जंगलों से घिरी यह जगह आपको बहुत आकर्षक लगेगी। यहां पर्यटकों को लुभाने के लिए एक डियर पार्क भी बनाया गया है।*

चोरल डेम- *चोरल डेम इंदौर से करीब 40 किलोमीटर दूर है। यहां का प्राकृतिक सौंदर्य आपको शांति प्रदान करेगा। नर्मदा नदी के बैकवॉटर के आसपास निर्मित यहां के हरे-भरे पेड़ और छोटी-छोटी पहाड़ियां बहुत आकर्षक हैं।*

आयुक्त कार्यालय में "वंदे-मातरम" एवं "जन-गण-मन" गायन से की अगस्त माह की शुरुआत

-नरेन्द्र दीक्षित

जगत प्रवाह. नर्मदापुरम। अगस्त माह के प्रथम कार्य दिवस की शुरुआत संभागायुक्त कार्यालय में राष्ट्रीय गीत वंदे मातरम एवं राष्ट्रगान जन-गण-मन के सामूहिक गायन के साथ हुई। इस अवसर पर संभागायुक्त के.जी. तिवारी, अपर आयुक्त आर.पी. सिंह, उपायुक्त राजस्व गणेश जायसवाल, संयुक्त आयुक्त जी.सी; दोहर तथा संभागीय अधिकारी एवं कर्मचारीगण उपस्थित रहे। कलेक्टर कार्यालय नर्मदापुरम में भी राष्ट्रीय गीत वंदे मातरम एवं राष्ट्रगान जन-गण-मन के सामूहिक गायन के साथ अगस्त माह के प्रथम कार्य दिवस की शुरुआत हुई। इस अवसर पर संयुक्त कलेक्टर अनिल जैन, तहसीलदार ग्रामीण देवशंकर धुर्वे एवं कलेक्ट्रेट के सभी अधिकारी, कर्मचारी उपस्थित रहे।

नाबालिग अपहर्ता बालिका को आरोपी सहित किया दस्तयाब

-कैलाशचंद्र जैन

जगत प्रवाह. विदिशा। पुलिस अधीक्षक विदिशा दीपक कुमार शुक्ला के निर्देशन में एवं अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक डॉ. प्रशांत चौबे एवं अनुविभागीय अधिकारी गंजबासौदा के मार्गदर्शन में थाना प्रभारी देहात बासौदा हरिकिशन लोहिया के नेतृत्व में ऑपरेशन मुस्कान के तहत थाने पर अपहृता नाबालिग बालिका के पिता द्वारा दिनांक 30/04/24 को अपनी नाबालिग पुत्री के बिना बताये कहीं चले जाने संबंधी रिपोर्ट दर्ज कराई थी जिस पर से थाने पर अपराध 155/24 धारा 363 भादवि का प्रकरण पंजीबद्ध कर विवेचना में लिया गया था जिसमें एक विशेष टीम को नाबालिग बालिका की दस्तयावी हेतु तत्परता से लगाया गया था। प्रकरण में सफलता प्राप्त करते हुए नाबालिग अपहृता बालिका को दिनांक 10/05/24 को दस्तयाव किया गया है। एवं आरोपी संजय कुशवाह पिता अशोक कुशवाह उम्र 20 साल निवासी ग्राम हासमपुर थाना पथरिया को गिरफ्तार किया जाकर प्रकरण में इजाफा धारा 366 भादवि की गई है। आरोपी को न्यायालय के समक्ष पेश किया है। *(जगत फीचर्स)*

कलम के सिपाही...

बहुआयामी प्रतिभा के धनी थे साहित्यकार और पत्रकार रघुवीर सहाय

नई कविता के प्रखर स्वर रघुवीर सहाय का जन्म 9 दिसंबर 1929 को लखनऊ में हुआ। आरंभिक शिक्षा-दीक्षा के बाद परास्नातक अँग्रेज़ी साहित्य में लखनऊ विश्वविद्यालय से किया। आकाशवाणी, नवभारत टाइम्स, दिनमान, प्रतीक, कल्पना, वाक् आदि पत्र-पत्रिकाओं के साथ पत्रकारिता, साहित्यिक पत्रकारिता और संपादन से संबद्ध रहे। कविताओं में उनका प्रवेश 'दूसरा सप्तक' के साथ हुआ। वह समकालीन हिंदी कविता के संवेदनशील 'नागर' चेहरा कहे जाते हैं। उनका सौंदर्यशास्त्र ख़बरों का सौंदर्यशास्त्र है। उनकी भाषा ख़बरों की भाषा है और उनकी अधिकांश कविताओं की विषयवस्तु ख़बरधर्मी है। ख़बरों की यह भाषा कविता में उतरकर भी निरावरण और टूक बनी रहती है। इसमें वक्तव्य है, विवरण है, संक्षेप-सार है। उसमें प्रतीकों और बिंबों का उलझाव नहीं है। ख़बर में घटना और पाठक के बीच भाषा जितनी पारदर्शी होगी, ख़बर की संप्रेषणीयता उतनी ही बढ़ेगी। वह इसलिए कविता की एक पारदर्शी भाषा लेकर आते हैं। वह अपनी कविताओं की जड़ों को समकालीन यथार्थ में रखते हैं, जैसा उन्होंने 'दूसरा सप्तक' के अपने वक्तव्य में कहा था कि 'विचारवस्तु का कविता में ख़ून कि तरह दौड़ते रहना कविता को जीवन और शक्ति देता है, और यह तभी संभव है जब हमारी कविता की जड़ें यथार्थ में हों।' इस यथार्थ के विविध आयाम के अनुसरण में उनकी कविताएँ बहुआयामी बनती जाती हैं और इनकी प्रासंगिकता कभी कम नहीं होती। उन्होंने सड़क, चौराहा, दफ़्तर, अख़बार, संसद, बस, रेल और बाज़ार की बेलौस भाषा में कविताएँ लिखी। रोज़मर्रा की तमाम ख़बरें उनकी कविताओं में उतरकर सनसनीख़ेज़ रपटें नहीं रह जाती, आत्म-अन्वेषण का माध्यम बन जाती हैं।

कविताओं के अलावे उन्होंने कहानी, निबंध और अनुवाद विधा में महती योगदान किया है। उनकी पत्रकारिता पर अलग से बात करने का चलन बढ़ा है। दूसरा सप्तक (1951), सीढ़ियों पर धूप में (1960), आत्महत्या के विरुद्ध (1967), हँसो, हँसो जल्दी हँसो (1975), लोग भूल गए हैं (1982) और कुछ पते कुछ चिट्ठियाँ (1989), एक समय था (1994) उनके प्रमुख काव्य-संग्रह हैं। सीढ़ियों पर धूप में (1960), रास्ता इधर से है (1972) और जो आदमी हम बना रहे हैं (1983) संग्रहों में उनकी कहानियाँ संकलित हैं। दिल्ली मेरा परदेस (1976), लिखने का कारण (1978), ऊबे हुए सुखी और वे और नहीं होंगे जो मारे जाएँगे; भँवर लहरें और तरंग (1983) उनके निबंध-संग्रह हैं। रघुवीर सहाय रचनावली (2000) के छह खंडों में उनकी सभी कृतियों को संकलित किया गया है। कविता-संग्रह 'लोग भूल गए हैं' के लिए उन्हें 1984 के साहित्य अकादेमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

प्रदेश में नन्हें तैराकों की फौज खड़ा कर रहा है मध्यप्रदेश

स्विमिंग एसोसिएशन, भोपाल स्विमिंग एसोसिएशन के सचिव एवं प्रदेश स्तर पर संयुक्त सचिव रामकुमार खिलरानी के कारण स्विमिंग में भारत 2032 तक लाएगा ओलंपिक में पदक

-दुर्गेश अरमोती

जगत प्रवाह. भोपाल। देश को स्विमिंग में 2032 ओलंपिक में पदक लाने के विजन पर मध्यप्रदेश स्विमिंग एसोसिएशन के संयुक्त सचिव एवं भोपाल स्विमिंग एसोसिएशन के सचिव रामकुमार खिलरानी लगे हुए हैं। सरकार से कोई खास मदद ना मिलने के बावजूद अपने जुझारूपन के कारण रामकुमार खिलरानी ने शहर, राज्य के 5 साल से 9 साल के नन्हें तैराकों के लिए भोपाल स्विमिंग स्पर्धा करवाई उसके साथ ही जीते हुए नन्हें तैराकों के लिए राज्य स्तरीय प्रतियोगिता का आयोजन 28 जुलाई को इंदौर में कराया। जगत प्रवाह द्वारा बातचीत करने पर रामकुमार खिलरानी ने बताया कि इस बार ग्रुप-4 की प्रतियोगिता का कोई निर्णय नहीं हुआ था। चूंकि मैं खुद एक तैराक रहा था तो समझता था कि खिलाड़ी तो छोटी उम्र से बनना चालू होते हैं। अगर इन नन्हें तैराकों को मंच देने के साथ प्रोत्साहित नहीं किया गया तो प्रदेश स्तर पर अच्छे तैराक कहां से आएंगे। आज जो 5 साल, 6 साल, 7 साल, 8 साल एवं 9 साल के तैराक जिन्होंने इस प्रतियोगिता में भाग लिया था भविष्य के ओलंपिक पदक इन्हीं में से कोई लेकर आयेगा। इसके आगे बताते हुए खिलरानी जी ने कहा कि आश्चर्य की बाद है ऐसे बड़े मकसद वाले आयोजन के लिए सरकार से कोई मदद नहीं मिलती है, अलबत्ता अपने संसाधन लगा कर आयोजन करवाया जाता है। इसे आप मेरा जुनून कहिए या मिशन। मैं 2032 ऑस्ट्रेलिया में आयोजित होने वाले ओलिंपिक खेलों में मध्यप्रदेश से कोई तैराक मेडल लाने की तरफ काम कर रहा हूं। बहुत ही सीमित संसाधनों के बावजूद देश के लिए पहला तैराकी के मेडल प्रदेश का कोई तैराक जो लाएगा। जैसे मैंने पहले आपको बतलाया था कि छोटी उम्र से तैयारी करने वाले आगे जाकर देश का नाम रोशन करते हैं। मुझे बेहद खुशी है कि बच्चों के तैराकी स्पर्धा से भोपाल शहर में 150 और प्रदेश स्तर पर 1000 से ऊपर नन्हें तैराकों में स्पर्धा में भाग लिया। अब इनमें से टैलेंट पहचान कर इन नन्हें तैराकों हम तैयार कर रहे हैं। शहर के प्रकाश तरण पुष्कर में हमने 20 तैराकों की प्रैक्टिस के लिए दो लेन और 02 घंटे की अनुमति ले रखी है जहां इन नन्हें टैलेंट को निखारने का काम हमारे अनुभवी ट्रेनर कर रहे हैं। आज प्रदेश स्तर पर तैराकी का माहौल बनाने के लिए मध्यप्रदेश स्विमिंग एसोसिएशन, भोपाल स्विमिंग एसोसिएशन और रामकुमार खिलरानी जैसे जीवट शख्सियत को साधुवाद।

(जगत फीचर्स)

मध्य प्रदेश सरकार बेरोज़गारी की समस्या को लेकर पूरी तरह ग़ैर ज़िम्मेदार है- कमलनाथ

-समता पाठक

जगत प्रवाह. भोपाल। मध्य प्रदेश की सरकार युवाओं को रोज़गार देने का कोई नया इंतज़ाम नहीं कर रही है और हद तो यह है कि उसके पास रोज़गार देने और बेरोजगारों की बढ़ती संख्या को लेकर सही आंकड़े तक नहीं है। विधानसभा में सरकार बेरोज़गारी को लेकर परस्पर विरोधी जवाब दे रही है। इससे स्पष्ट हो जाता है कि रोज़गार और नौकरी मोहन यादव सरकार की प्राथमिकताओं में कहीं नहीं है। इसके उलट मध्य प्रदेश में नौकरी और रोज़गार देने के नाम पर घोटाले रोज़ बढ़ते जा रहे हैं। कमलनाथ का कहना है कि मैं मुख्यमंत्री से पूछना चाहता हूँ कि प्रदेश के नौजवानों का भविष्य अंधकार में डालकर आख़िर वह और उनकी सरकार क्या हासिल करना चाहते हैं? अगर नौजवान बेरोज़गार रहेंगे तो प्रदेश का भविष्य कैसे उज्ज्वल हो सकता है?मध्य प्रदेश और

पूरे देश में नौकरियों में कमी आ रही है। कर्मचारी भविष्य निधि संगठन EPFO के आंकड़ों के मुताबिक़ वर्ष 2023-24 में देश में सात लाख नौकरियां कम हुई है और मध्यप्रदेश में 29 हज़ार नौकरी कम हुई है। यह अत्यंत चिंताजनक मामला है। प्रदेश में पहले ही बेरोजगारों की बड़ी संख्या है, जो कभी पटवारी भर्ती घोटाले, तो कभी नर्सिंग घोटाले, तो कभी व्यापमं घोटाले, तो कभी आरक्षक भर्ती घोटाले से परेशान हैं। अब आंकड़े बता रहे हैं कि निजी क्षेत्र में भी नौकरी घटती जा रही है। सवाल यह है कि अगर सरकार न तो सार्वजनिक क्षेत्र में और न ही निजी क्षेत्र में नौकरी उपलब्ध करा रही है तो आख़िर नौकरियों को लेकर उसकी नीति क्या है? यह अत्यंत दुर्भाग्य की बात है कि एक तरफ़ नौकरियां घट रही है, रोज़गार के अवसर कम हो रहे हैं और सरकारी भर्ती प्रक्रिया पूरी तरह संदिग्ध होती जा रही है तो दूसरी तरफ़ प्रदेश सरकार सिर्फ़ इवेंटबाज़ी में व्यस्त है और कपोलकल्पित वादे करने में जुटी हुई है। प्रदेश का नौजवान इस अन्याय को बर्दाश्त नहीं करेगा और कांग्रेस पार्टी हर क़दम पर नौजवानों के साथ खड़ी है।

(जगत फीचर्स)

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक विजया पाठक द्वारा जेयन आफसेट वर्क्स, पुल बोगदा भोपाल 462023 (मप्र) से मुद्रित तथा एफ-116/17, शिवाजी नगर, भोपाल (मप्र) से प्रकाशित। **संपादक : विजया पाठक।**
RNI-MPBIL/2011/39805 समाचार चयन के लिए पी.आर.बी. एट के तहत जिम्मेदार। (सभी विवादों का न्यायक्षेत्र भोपाल रहेगा।)